# रिमझिम–1

## पहली कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक



यह किताब .................................... की है।

0117



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

**प्रथम संस्करण**
*जनवरी 2006 माघ 1927*

**पुनर्मुद्रण**
*जनवरी 2007 पौष 1929*
*नवंबर 2007 कार्तिक 1929*
*जनवरी 2009 पौष 1930*
*जनवरी 2010 माघ 1931*
*जनवरी 2011 माघ 1932*
*जनवरी 2012 माघ 1933*
*अक्तूबर 2012 आश्विन 1934*
*अक्तूबर 2013 आश्विन 1935*
*नवंबर 2014 अग्रहायण 1936*
*मई 2016 वैशाख 1938*
*फ़रवरी 2017 माघ 1938*
*नवंबर 2017 अग्रहायण 1939*
*दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940*
*सितंबर 2019 भाद्रपद 1941*

**PD 440T RPS**



**₹ 65.00**

*एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।*

*प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा एजुकेशनल स्टोर्स, एस–5, बुलंदशहर रोड इंडस्ट्रियल एरिया, साइट–I (नज़दीक आर.टी.ओ. ऑफ़िस) गाज़ियाबाद (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।*

**ISBN 81-7450-477-X**



**एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय**

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
**नयी दिल्ली 110 016** फोन : 011-26562708

108ए 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
**बेंगलुरु 560 085** फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
**अहमदाबाद 380 014** फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
**कोलकाता 700 114** फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
**गुवाहाटी 781021** फोन : 0361-2674869



**प्रकाशन सहयोग**

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *बिबाष कुमार दास*
संपादक : *मरियम बारा*
उत्पादन सहायक : *राजेश पिप्पल*

**सज्जा**
*निधि वाधवा*

**आवरण**
*तापस गुहा*

**चित्रांकन**
*अनिल चैत्या वांगड़*
*जगदीश जोशी*
*तापस गुहा*
*धर्मशिला देवी*
*निज एनीमेशन एंड डिजाइन*
*निधि वाधवा*
*नारायण प्रधान*
*वी. मनीषा*
*संजीत कुमार पासवान*

# आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् प्राथमिक पाठ्यपुस्तक सलाहकार समूह

की अध्यक्ष प्रोफ़ेसर अनीता रामपाल और हिंदी पाठ्यपुस्तक समिति की मुख्य सलाहकार, डॉ. मुकुल प्रियदर्शिनी की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

*निदेशक*
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
*20 दिसंबर 2005*

# बड़ों से दो बातें

नई किताब अब आपके हाथों में है। यह किताब केवल एक पाठ्यपुस्तक ही नहीं बल्कि बच्चों के साथ मिलकर कविता गाने, कहानी सुनने-सुनाने, भाषा के रोचक खेल खेलने का एक ज़रिया भी है। किताब में इस बात के संकेत भी मिलते हैं कि बच्चों से बातचीत करने के लिए, उन्हें स्वयं सोचकर कुछ कहने, पढ़ने-लिखने के लिए, बेझिझक होकर स्वयं को अभिव्यक्त करने का आत्मविश्वास पैदा करने के लिए घर और स्कूल में कितने ही अवसर ढूँढ़े जा सकते हैं। दुनिया को समझने के लिए भाषा एक बढ़िया औज़ार का काम करती है। इसलिए ज़रूरी है कि हम दुनिया को बच्चों की निगाह से देखें और बच्चों की ज़िंदगी में भाषा के महत्त्व को समझें। अगर इस किताब का उपयोग करते समय कुछ महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखा जाए तो बच्चों के लिए भाषा सीखना एक आनंददायी दौर से गुज़रने के समान होगा।

- पहली कक्षा में आने वाले बच्चे **समृद्ध और विकसित मातृभाषा** ज्ञान के साथ आते हैं। वह अपनी भावनाओं और ज़रूरतों को भाषा के माध्यम से बखूबी अभिव्यक्त कर लेते हैं। वह अपने आसपास बोली जाने वाली भाषा को अनेक संदर्भों और स्थितियों में प्रयोग होते देखते हैं और अनुभव करते हैं कि भाषा के ज़रिए सभी अपनी इच्छाएँ और ज़रूरतें ज़ाहिर कर सकते हैं। यह सब देखकर बच्चे मौखिक भाषा के बारे में कुछ मान्यताएँ और अवधारणाएँ बना लेते हैं।

  ऐसी ही अवधारणाएँ बच्चे पढ़ने-लिखने के बारे में भी बनाते हैं जब वे अपने आसपास के लोगों को पढ़ते-लिखते देखते हैं। इन्हीं में से एक अवधारणा का उदाहरण है-बिस्कुट के रैपर पर लिखे शब्दों को देख कर बच्चे पहचान लेते हैं कि बिस्कुट का नाम लिखा है। यह पहचान बच्चे अपने अनुभव और अनुमान के आधार पर करते हैं। बच्चे भले ही छपे हुए शब्द को अलग-अलग हिज्जे करके न बता सकें कि उसमें कौन-कौन से स्वर और व्यंजन हैं पर वे यह बात भली-भाँति जानते हैं कि किसी चीज़ के आवरण पर लिखे शब्द उसी चीज़ का नाम बताएँगे। जैसे किसी फ़िल्म के पोस्टर पर लिखे शब्द उस फ़िल्म का ही नाम बताते हैं। इस निष्कर्ष पर बच्चे तरह-तरह के अनुभवों से गुज़रकर पहुँचते हैं।
- भाषा नियमबद्ध होती है। बच्चों की भाषा इस बात का प्रमाण है कि वे इन **नियमों का प्रयोग** करते हैं भले ही वे इन नियमों को बता न पाएँ। यदि परिवेश में बोली जाने वाली भाषा सुनकर बच्चे बोलना सीख जाते हैं तो समृद्ध परिवेश मिलने पर बच्चे पढ़ना-लिखना भी सीख सकते हैं। लिखित भाषा का भरपूर परिवेश यदि स्कूल में बनाया जाए तो स्वतः ही पढ़ने और लिखने की क्षमता का विकास करने में बच्चों को सहायता मिलेगी।

- पढ़ना और लिखना एक साथ चलने वाली प्रक्रियाएँ हैं। ये न केवल साथ-साथ विकसित होती हैं बल्कि एक-दूसरे के विकास में सहायक भी होती हैं। पढ़ने-लिखने के बारे में बात करते हुए इस बात पर बल देना ज़रूरी होगा कि बच्चे भाषा का इस्तेमाल सिर्फ़ पढ़ने-लिखने और बोलने के लिए ही न करें, बल्कि **तर्क** करने, **विश्लेषण** करने, **अनुमान** लगाने, अपनी भावनाओं और सोच को **अभिव्यक्त** करने और **कल्पना** करने आदि के लिए भी करें।
- इस पुस्तक में बाल-साहित्य भरपूर मात्रा में दिया गया है ताकि बच्चों का पढ़ने-लिखने के प्रति रुझान बढ़ सके। यह ज़रूरी है कि बच्चों के लिए चुनी गई कविताएँ मज़ेदार हों, लय और संगीत प्रधान हों, उनकी ज़िंदगी के अलग-अलग पहलुओं को छूती हों, रचनाओं की भाषा बनावटी न हो, बल्कि बच्चों की अपनी भाषा से मिलती-जुलती हो।
- कविताओं के समान ही **कहानियाँ** भी बच्चों को भाती हैं। किताब में दी गई कहानियों के अतिरिक्त पारंपरिक कहानियों जैसे पंचतंत्र, जातक कथाएँ, विक्रमादित्य की कहानियाँ आदि के साथ ही अलग-अलग देशों एवं क्षेत्रों की लोककथाएँ भी बच्चों को सुनाएँ। कहानी सुनते समय बच्चे अनुमान लगाते हैं कि आगे क्या होगा। अनुमान का सही सिद्ध होना बच्चों को आनंदित तो करता ही है, उनका विश्वास भी बढ़ाता है।
- **खेल** हमारी संस्कृति के अंग हैं। किताब की शुरुआत में ही दिया गया है खेलगीत - **हरा समंदर गोपी चंदर**। बच्चों से गाकर इसे खेलने के लिए कहें। खेल के दौरान बच्चे भाषा का इस्तेमाल करते हैं। खेल समय की बर्बादी नहीं बल्कि भाषा को विस्तार देते हैं।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 बहुभाषिकता का संसाधन के रूप में प्रयोग करने की संस्तुति करती है। विद्यालय में बच्चों को अपने घर की बोली में बोलने के प्रचुर अवसर दें। कक्षा में भी पाठों में आए स्थानीय/क्षेत्रीय भाषा के शब्दों की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। जैसे- 'आम की टोकरी' कविता पढ़ाने के दौरान चर्चा करते समय बच्चों को बताएँ कि हमारे देश में राजस्थान, बिहार, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि कई प्रदेशों में छोटी लड़कियों को बातचीत के दौरान छोरी, छोकरी कहकर पुकारते हैं। दैनिक जीवन में लोग तरह-तरह के क्षेत्रों में काम करते हैं, इन कार्यक्षेत्रों की अपनी शब्दावली है। इन पर बच्चों को बातचीत के अवसर दें। ऐसे मौके **शब्द-भंडार** की वृद्धि में सहायक होते हैं।
- **कलाओं** एवं **लोककलाओं** से रची-बसी है हमारी संस्कृति। किताब में कला संबंधी अनेक गतिविधियाँ हैं। नाटक, संगीत, कला में बच्चों को रस तो मिलता ही है, इनसे बच्चों की भाषा भी समृद्ध होती है। लोकजीवन में पहले से स्थापित लोककलाओं को भी किताब में स्थान दिया गया है। किताब में दिए कुछ चित्र मधुबनी (बिहार), वरली (महाराष्ट्र), पट्ट चित्र (उड़ीसा) शैलियों के हैं। इनकी ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें और अपने इलाके की लोककला शैली के कलाकारों को स्कूल में आमंत्रित करके उनसे कुछ सीखने का मौका बच्चों को दें।
- चित्र शब्द-भंडार की वृद्धि, कल्पना, तर्क, कौशल तथा अभिव्यक्ति के विकास में सहायक होते हैं। भाषा सीखने की प्रक्रिया में चित्रों की विशेष भूमिका होती है। चित्र बनाना बच्चों के

लिए लिखना सीखने और अर्थ समझने का एक शुरुआती दौर है। चित्रों से जुड़े सवालों के ज़रिए बच्चों में चीज़ों को बारीकी से देखने और उन पर विस्तृत प्रतिक्रिया देने की आदत विकसित होती है।

चित्रों से पगी इस किताब में बच्चों को भी चित्र बनाने के कई मौके मिले हैं, ताकि उनके लेखन और चित्रकारी में सुघड़ता आ सके और उनमें रचनात्मकता एवं सौंदर्यबोध का विकास हो। कविता-कहानी पढ़ाने के बाद चित्रों के बारे में बच्चों से बातचीत करें। किताब में विषय सामग्री एवं चित्रों के माध्यम से बच्चों में संवेदनशीलता भी विकसित की जा सकती है। कक्षा के दृश्य के चित्र पर बच्चों से बातचीत करते समय विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की क्षमताओं और कठिनाइयों से उन्हें अवगत कराएँ तथा इनके प्रति समानता और स्नेह की भावना बच्चों में जगाएँ। आपकी कक्षा में यदि ऐसे बच्चे हैं तो उनमें निहित क्षमताओं को परस्पर सहयोग से उभारें तथा उनकी सराहना करें।

इस किताब को पढ़ते वक्त आप सभी के ज़हन में यह सवाल उठेगा कि इस किताब से बच्चे मात्राएँ कैसे सीखेंगे। यह ज़रूरी नहीं है कि बच्चे सारे अक्षर जानने के बाद ही मात्रा पहचान पाएँगे या इस्तेमाल कर पाएँगे। सार्थक संदर्भ में किसी भी प्रकार की लिखित सामग्री बार-बार देखने के बाद बच्चे मात्रा की ओर बढ़ सकते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि तब तक बच्चे पढ़ेंगे कैसे, लिखेंगे कैसे? इसका जवाब यह है कि बच्चे आपकी मदद से, चित्रों से मिल रहे संकेतों को इस्तेमाल करते हुए और अनुमान लगाते हुए पढ़ेंगे और यह प्रक्रिया लंबी भी हो सकती है। बच्चों को लिखित और मुद्रित सामग्री से भरपूर परिवेश कितना उपलब्ध हो पाता है यह इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चों के लिए शब्द एक चित्र ही है। जिस प्रकार बच्चे चित्र को एक बार देखकर पहचान लेते हैं तथा उसका एक रूप मानस में गढ़ लेते हैं उसी प्रकार किसी शब्द को देखकर भी वे मात्राओं की तस्वीर मन-मस्तिष्क में बैठा लेते हैं। इस बीच आप पाएँगे कि बच्चे अपने बनाए नियमों के अनुसार शब्दों/वर्तनी को गढ़ते हैं। बच्चों को सुधारने की जल्दी न करें और उन्हें सही वर्तनी पर पहुँचने का पर्याप्त समय और आज़ादी दें।

मसलन, आपकी कक्षा में 'झूला' कविता का आनंद लिया जा रहा है। आप न, म, अ, ठ, ए अक्षरों के बारे में कुछ बातचीत कर चुके हैं। झूला अपने आप में बात करने के लिए बहुत ही मज़ेदार विषय है। बच्चों का ध्यान पिछले पन्नों पर दिए गए शब्दों, जैसे- स्कूल, अँगूठा आदि पर दिलवाएँ। साथ ही उनसे 'ऊ' की ध्वनि वाले शब्द बोलने के लिए कहें जिन्हें आप श्यामपट्ट या चार्ट पेपर आदि पर लिख सकते हैं। अब आप उनका ध्यान इन लिखे हुए शब्दों और इनकी ध्वनियों पर दिलवाएँ। यकीनन वे ' ू ' का संबंध इसकी ध्वनि से जोड़ पाएँगे। पहचानने और बोलने दोनों में, बच्चे पिछले पन्नों पर जाकर स्कूल, अँगूठा जैसे शब्दों पर गौर कर सकते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 भाषा-शिक्षण के संदर्भ में समग्रतावादी दृष्टिकोण अपनाने की संस्तुति करती है। इसलिए रिमझिम में लेखन कौशल को अलग से न लेकर

विभिन्न भाषायी कौशलों के अभिन्न अंग के रूप में लिया गया है। लेखन की सामान्य रूप से समझी जाने वाली गतिविधियों से पहले बच्चों को स्वयं को अभिव्यक्त करने की अनेक प्रकार की गतिविधियाँ दी गई हैं, जैसे–अँगूठे की छाप से चित्र बनाना, अक्षर और संख्याओं से चित्र बनाना आदि। जिस तरह शब्द और वाक्य अभिव्यक्ति के तरीके हैं उसी प्रकार रंग भरना और चित्र बनाना भी। जिन बातों को बच्चे पहले से जानते और समझते हैं उन बातों को वे सहजता से लिख सकते हैं। इसलिए किसी भी लेखन कार्य से पहले उस पर बातचीत करने की गतिविधियाँ रिमझिम में पर्याप्त मात्रा में दी गई हैं। रिमझिम में इस बात पर बल दिया गया है कि बच्चे अपने मन की बात खुल कर लिख सकें। इसके साथ ही लेखन द्वारा पहचान, वर्गीकरण, सूची बनाना, मिलाना, बढ़ाना आदि क्रियाकलाप दिए गए हैं ताकि बच्चों में खेल ही खेल में लेखन कौशल का विकास हो।

- पाठों के अंत में **अभ्यास एवं गतिविधियाँ** देने का उद्देश्य बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करना एवं उनकी भाषा का विस्तार करना है। ऐसे अभ्यास और गतिविधियाँ भी आप सोचकर करवाएँ और बच्चों की मदद करें।
- गतिविधियों से भरपूर इस किताब में हर गतिविधि के शीर्षक के साथ चूहा नज़र आता है। **नटखट चूहा** बच्चों को कुछ–न–कुछ करने को कहता है। किताब में **सुहानी बिल्ली** बार–बार आई है। बच्चों से बातें करती हुई सुहानी उन्हें गतिविधि एवं अभ्यास करने के लिए प्रेरित करती है। सुहानी से बच्चों का एक मीठा रिश्ता बन जाता है। वे किताब खोलते ही उसे ढूँढ़ते हैं और सारी घटनाएँ बार–बार याद करके खुश होते हैं।
- रिमझिम के पठन–पाठन को लेकर उपजे सवालों का जवाब देने के लिए परिषद् द्वारा शिक्षक संदर्शिकाएँ विकसित की गई हैं– 'कैसे पढ़ाएँ रिमझिम भाग–1' तथा 'कैसे पढ़ाएँ रिमझिम भाग–2'। रिमझिम पढ़ाने में ये संदर्शिकाएँ शिक्षक साथियों की मदद करेंगी।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 कक्षा–1 और 2 के लिए भाषा तथा गणित के माध्यम से पर्यावरण अध्ययन तथा कला शिक्षा को पढ़ाने की संस्तुति करती है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए परिषद् द्वारा एक ट्रेनिंग मॉड्यूल विकसित किया गया है– Skills in Environmental Studies Through Language and Maths in Early Grades—A Training Module.
- ट्रेनिंग मॉड्यूल तथा शिक्षक संदर्शिका 'कैसे पढ़ाएँ रिमझिम भाग–1 और भाग–2' परिषद् के प्रकाशन विभाग से प्राप्त किए जा सकते हैं।

# आभार

पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए प्रोफ़ेसर कृष्ण कांत वशिष्ठ, *विभागाध्यक्ष,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी के प्रति हम विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने हर संभव सहयोग दिया।

परिषद उन समस्त रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाएँ पुस्तक में शामिल की गई हैं। रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली (आम की कहानी एवं मेरी रेल); निदेशक, उ.प्र. हिंदी संस्थान, लखनऊ (आम की टोकरी, बंदर गया खेत में भाग एवं भगदड़); प्रकाशक, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली (गेंद-बल्ला); प्रकाशक, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली; प्रकाशक राजपाल एंड संस, दिल्ली (चूहो! म्याऊँ सो रही है); मुख्य संपादक, रत्नासागर प्रकाशन, दिल्ली (लालू और पीलू); प्रकाशक, सफ़दर हाश्मी मेमोरियल ट्रस्ट, नई दिल्ली; प्रकाशक, संस्था प्रथम, दिल्ली (बंदर और गिलहरी); प्रकाशक, एकलव्य, भोपाल (पत्ते ही पत्ते, मैं भी एवं हलीम चला चाँद पर); विभा सक्सेना, दिल्ली (पकौड़ी एवं पगड़ी); पूनम सेवक, बरेली (एक बुढ़िया एवं चार चने); रोहिताश्व अस्थाना, हरदोई (झूला) के हम आभारी हैं।

निदेशक, राष्ट्रीय बाल भवन, नई दिल्ली एवं संग्रहालयाध्यक्ष, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के प्रति भी हम कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं, जिन्होंने अपनी संस्था के पुस्तकालय के उपयोग की हमें सहर्ष अनुमति दी।

पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए आरती गौनियाल, *सहायक शिक्षिका,* सर्वोदय विद्यालय, कैलाश एन्कलेव, सरस्वती विहार, नई दिल्ली; उषा द्विवेदी, *मुख्य अध्यापिका,* केंद्रीय विद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; योगिता शर्मा, *सहायक शिक्षिका,* नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, मधु विहार, नई दिल्ली; रीता भगत, *शिक्षिका,* केंद्रीय विद्यालय, सेक्टर 4, आर.के. पुरम, नई दिल्ली; श्रीप्रसाद, *बाल साहित्यकार,* वाराणसी के हम आभारी हैं।

मुख्य अध्यापक, नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, कापसहेड़ा, समालखा एवं बिजवासिन ने हमें अपने विद्यालयों में बच्चों तथा शिक्षकों से किताब के संबंध में बातें करने का अवसर दिया, इसके लिए हम आभार व्यक्त करते हैं।

पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए सीमा मेहमी, *डी.टी.पी. ऑपरेटर;* उत्तम कुमार, *डी.टी.पी. ऑपरेटर;* रेखा सिन्हा, *प्रूफ़ रीडर;* राधा, *कॉपी एडीटर;* सुशीला शर्मा एवं निर्मल मेहता, *सहायक कार्यक्रम समन्वयक;* शाकम्बर दत्त, *इंचार्ज,* कंप्यूटर कक्ष, ओमप्रकाश ध्यानी, अशोक एवं मनोहरलाल, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., आर.सी.दास, *फोटोग्राफ़र,* सी.आई.ई.टी. के भी हम आभारी हैं। प्रकाशन विभाग द्वारा हमें पूर्ण सहयोग एवं सुविधाएँ प्राप्त हुईं, इसके लिए हम आभारी हैं।

# पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

**अध्यक्ष, प्राथमिक पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति**

अनीता रामपाल, *प्रोफ़ेसर,* केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय।

**मुख्य सलाहकार**

मुकुल प्रियदर्शिनी, *प्राध्यापिका*, लेडी श्रीराम कॉलेज, नई दिल्ली।

**सदस्य**

अक्षय कुमार दीक्षित, *शिक्षक*, नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली।

कृष्ण कुमार, *प्रोफ़ेसर एवं निदेशक*, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

मंजुला माथुर, *प्रवाचक*, सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

मालविका राय, *शिक्षिका*, हैरीटेज़ स्कूल, डी–II, वसंत कुंज, नई दिल्ली।

सोनिका कौशिक, *प्रवक्ता*, जीसस एंड मेरी कॉलेज, नई दिल्ली।

**सदस्य एवं समन्वयक**

लता पाण्डे, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।




# कहाँ क्या है?













* तारांकित रचनाएँ केवल पढ़ने के लिए हैं।























